4

तत्पुरुष समास
कुगतिप्रादि समास और उपपद समास

इस पाठ में कु समास का, गति समास का, प्रादि समास का, और उपपद समास का वर्णन किया गया है। इसके आदि तीन समासों के वर्णन के लिए ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र की व्याख्या की गई है। प्रादि समास विधायक सूत्रों और वार्तिकों की व्याख्या की गई है। इसके बाद उपपद समास ''उपपदमतिङ्ग'' से किया गया है। इसके पश्चात् समासान्त कार्यों का विधायक सूत्रों का वर्णन किया गया है। यहाँ प्रसङ्ग से तत्पुरुषसमास निष्पन्न शब्दों के लिङ्ग निर्णायक सूत्रों को समास में विशिष्ट आदेश और विधायक सूत्रों का वर्णन किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- कुगति प्रादि समासों के सूत्रों और वार्तिकों को जान पाने में;
- उपपद समास सम्बन्धी सूत्रों को जान पाने में;
- तत्पुरुषसमासान्त प्रत्ययों के विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- लिङ्ग निर्णय सूत्रों को जान पाने में;
- विशिष्ट आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- सूत्र सहित समास को जानकर उनके अन्य समस्त पदों के निर्माण कर पाने में।

(4.1) ''कुगतिप्रादयः''

सूत्रार्थ–समर्थ कुगति प्रादि को समर्थ से सुबन्त के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से कुगति प्रादि समास होते हैं। इस सूत्र में एक पद है। ''कुगति प्रादयः'' यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है। कुश्च गतिश्च प्रादिश्च कुगतिप्रादयः कु. गति और प्र आदि कुगतिप्रादय इसमें इतरेतरद्वन्दसमास है। ''सुबामन्तिते पगङ्ग वत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् की और ''नित्य फ्रीडाजीविकयोः'' सूत्र से नित्यम् की अनुवृत्ति होती है। ''समर्थः पदविधिः'' सूत्र से समर्थः पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। यद्यपि कु पृथिवीवाची स्त्रीलिङ्ग शब्द है तथापि गति प्रातिसाहचर्य से कुत्सित अर्थ में विद्यमान कु इस अव्यय की यहाँ ग्रहण किया गया है अधि कार अनुवृत्तिलब्द पदों संयोग कर ''समर्थ कु, गति, प्र आदि समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष समास होता है।''

उदाहरण–कु समास का उदाहरण है कुपुरुषः। कुत्सितः पुरुषः (बुरा पुरुष) इस लौकिक विग्रह में कु पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह में कु पुरुष सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद ''कु'' का समास शास्त्र में प्रथमानिर्दिष्ट की उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व निपात होने पर कु पुरुष सु स्थिति होती है समुदाय की समास संज्ञक के प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुप् के सु प्रत्यय का लोप होने पर निष्पन्न कुपुरुष इस प्रातिपदिक से सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में कुपुरुषः रूप होता है।

गति समास का ऊरीकृत्य, शुक्लीकृत्य, पटपटाकृत्य इत्यादि यहाँ उदाहरण हैं। ''प्रादयः'' इस सूत्र से प्र आदि बाईस की निपात संज्ञा होती है। प्र आदि समास में (शोभनः पुरुषः सुपुरुषः) शोभन पुरुष ये सुपुरुष इत्यादि उदाहरण है। नित्य समास से अस्वपद विग्रह सभी जगह प्रदर्शन किया जाता है।

(4.2) ''ऊर्यादिच्विडाचश्च''

सूत्रार्थ–ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त (अन्तवाले) और डाच् प्रत्ययान्त के क्रिया के योग में गतिसंज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से गतिसंज्ञा होती है। ऊरीकृत्य इत्यादि में गतिसंज्ञा विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। ''ऊर्यादिच्विडाचः'' यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। ऊरी आदि में है जिसके के हैं ऊर्यादयः। यह तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि है। ऊर्यादयः च च्विश्च डाच् च ऊर्यादिच्विडाचः। ऊरी आदि, च्वि और डाच् प्रत्यय ऊर्यादिच्विडाचः इसमें इतरेतरद्वन्दसमास है। ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' इस सूत्र से क्रिया योग में अनुवृत्ति होती है। ''गतिश्च'' इससे अनुवृत्ति का गति पद के वचन विपरिणाम से गतयः होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस च्वि प्रत्यय से च्वि प्रत्ययान्त का

टिप्पणियाँ

और डाच् प्रत्यय से डाजन्त का बोध होता है। और सूत्र का अर्थ होता है ''ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त और डाच् प्रत्ययान्त क्रिया योग में गति संज्ञक होते हैं।

''प्रागीश्वरान्निपाता:'' इस सूत्र में ऊर्यादि च्विप्रत्ययान्त और डाच्प्रत्ययान्त की निपात संज्ञा होने पर ''स्वरादिनिपातमव्ययम्'' इस सूत्र से उनकी अव्यय संज्ञा होती है। च्विडाच् प्रत्ययों के कृञ्, वस् के योग में ही विधान से उसके साहचर्य से ऊर्यादि की भी कृञ्, वस् से ही विधान किया गया है।

उदाहरण–ऊर्यादि का उदाहरण है ऊरीकृत्य। ऊरी का कृत्वा से योग होने पर प्रकृत सूत्र गतिसंज्ञा में ''कुगतिप्रादय:'' इससे गति समास में प्रक्रिया कार्य में ऊरी कृत्वा होती है। ऊरी कृत्वा इस अव्यय से सु प्रत्यय का लोप होने पर ''समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वोल्यप्'' इस सूत्र से क्त्वा प्रत्यय के ल्यप् का लोप होने पर तुक का आगम होने पर ऊरी कृत्य रूप बना। च्वि प्रत्ययान्त की गति संज्ञा में शुक्लीकृत्य और डाच् प्रत्ययान्त की गति संज्ञा होने पर पटपटाकृत्थ उदाहरण बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''कुगतिप्रादय:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. कुतत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
3. गति तत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
4. प्रातितत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
5. ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

प्रातिसमास विधायक वार्तिकों को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(4.2.1) ''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया (वार्तिकम्)

वातिक कार्य:–गति आदि अर्थ में वर्तमान प्रआदि प्रथमान्त समर्थ से सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र में महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र का नित्य समास विधान से यह वार्तिक भी नित्यसमास का बोध कराती है। वार्तिक में प्रादय: प्रथमा बहुवचनान्त है, गताद्यर्थे सप्तम्येकवचनान्त प्रथमया तृतीयान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र से समर्थ: यह अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबायन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुपू पद की अनुवृत्ति होती है। प्रथमया का और सुपा का तदन्त विधि में समर्थ पद से सह अन्वय से प्रथमान्त से समर्थ सुबन्त

से आता है। गति आदि अर्थ में प्र आदि शिष्टसम्मत प्रयोग होते हैं। और वार्तिक का अर्थ आता है गति आदि अर्थ में वर्तमान प्र आदि प्रथमान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का प्राचार्यः उदाहरण है। प्रगतः आचार्यः इस लौकिक विग्रह में आचार्य सु इस अलौकिक विग्रह में उक्त वार्तिक (प्रादयोगताद्यर्थेप्रथमया) में विद्यमान प्र नियात का आचार्य सु को प्रथमान्त सुबन्त के साथ प्रादितत्पुरुषसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में प्राचार्यः रूप होता है। इसी प्रकार विरुद्ध पक्ष और विपक्ष इत्यादि इस वार्तिक के उदाहरण है।

(4.2.2) ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–क्रान्ति आदि अर्थ में विद्यमान अति आदि द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र महाभाक्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र का नित्य समास विधानात् से यह वार्तिक भी नित्य समास का बोध होता है। वार्तिक में अत्यादयः प्रथमा बहुवचनान्त है। क्रान्त आदि अर्थ में सप्तम्येकवचनान्त, द्वितीया और तृतीयान्त पद है। ''समर्थः पदविधिः'' इस सूत्र से समर्थः पद का ग्रहण किया गया है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति आती है। द्वितीयया का और सुपा का तदन्तविधि में समर्थ पद से सह अन्वय से द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ आता है। क्रान्त आदि अर्थ में अति आदि का शिष्ट सम्मत प्रयोग हैं। और वार्तिक का अर्थ हैं'' क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान अति आदि द्वितीयान्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अतिमालः। अतिक्रान्तः मालाम् इस लौकिक विग्रह में अतिमाला अम् इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से क्रान्तायर्थ में विद्यमान अति नियात का माला अम् इस द्वितीयान्त को सुबन्त के साथ प्रादितत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में सु प्रत्यय का लोप होने पर अतिमाला इस स्थिति में ह्रस्व विधान के लिए उपसर्जन संज्ञा विधायक सूत्र प्रवृत्त है।

(4.3) ''एक विभक्ति चापूर्व नियाते''

सूत्रार्थ–विग्रह में नियत विभक्ति को उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं (एक विभक्ति, च, अपूर्व निपाते)। एकविभक्ति च अपूर्वनिपाते पदच्छेद है। यहाँ एकविभक्ति यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। अपूर्वनिपाते सप्तमी एकवचनात्त पद है। ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपजर्सनम्'' इस सूत्र से समासे उपसर्जनम् दो पदों की अनुवृत्ति की जा रही है। एका विभक्तिः यस्य तद् एकविभक्ति (एक विभक्ति है जिसकी एकविभक्ति इसमें

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि समास है। नियत का अर्थ विभक्ति हैं। पूर्वश्चासौ निपातः पूर्वनिपातः (पूर्व में है जिसके निपात) इसमें कर्मधारय समास है। न पूर्वनिपातः अपूर्वनिपात तस्मिन् अपूर्व निपाते इति नञसमास नहीं है पूर्व नियात जिसमें अपूर्वनिपाते इसमें नञ्समास है। यहाँ पर (नञः) नञ् का पर्युदासप्रतिवेद्यार्थ है। पूर्व निपात भिन्न कार्य में कर्त्तव्यः यही अर्थ है। समास पद से समास उन्मुख विग्रहवाक्य का ग्रहण किया गया है। और समास में नाम समासोन्मुखविग्रह वाक्य है। पूर्व निपात भिन्न कार्य में कत्तव्य समास में समासोन्मुखविग्रहवाक्य में जिस नियत विभक्तिक को उपसर्जन होता है यही सूत्रता का तात्पर्य है और सूत्रार्थ होता है विग्रह में जो नियत विभक्तिक है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है, किन्तु उसका पूर्वनिपात नहीं होता है।

उदाहरणः–इस सूत्र का उदाहरण है अतिमालः मालाम् इस लौकिक विग्रह में ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इससे प्रादि समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर अतिमाल स्थिति में प्रस्तुतसूत्र से विग्रह वाक्य में मालाय् का नियतविभक्तिकत्व से माला शब्द की उपसर्जन संज्ञा होती है अतिमाला यहाँ उपसर्जन का ह्रस्व विधाायक सूत्र प्रवृत्त हुआ है।

(4.4.) ''गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य''

सूत्रार्थ–उपसर्जन जो गो शब्द की और स्त्री प्रत्ययान्त तदन्त प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ह्रस्व होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। गोस्त्रियोः उपसर्जनस्य यह सूत्र का प्रतिच्छेद है। यहाँ गोस्त्रियोः यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है। उपसर्जनस्य यह षष्ठयेकवचनान्त पद है। ''ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इस सूत्र से ह्रस्वः प्रातिपदिकस्य इन दोनों पदों की अनुवृत्ति आती है। गौश्च स्त्रीच गोस्त्रियों (गाय और स्त्री) तयोः गोस्त्रियोः इस पद में इतरेतर द्वन्द है। यहाँ गोप पद से गो शब्द का ग्रहण किया गया है। स्त्री पद से यहाँ ''स्त्रियाम्'' इस अधिकार में विहित टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् ये प्रत्यय ग्रहण किये गये हैं स्त्री शब्द का नहीं। स्त्री पद से तदन्त विधि में स्त्री प्रत्ययों का ही ग्रहण किया गया है। ''उपसर्जनस्य'' यह गो और स्त्री पद का विशेषण है। गोस्त्रियोंः प्रातिपदिक का विशेषण है। और उपसर्जन का गोस्त्रियोः प्रातिपदिक का तात्पर्य होता है उपसर्जन का गो और स्त्री प्रातिपदिक का तात्पर्य होता है उपसर्जन गो प्रातिपदिक के उपसर्जन के और स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक का। उपसर्जन के गो प्रातिपदिक के और स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है। ''अलोऽन्त्यस्य'' और ''अचश्च'' इन दो परिभाषाओं के बल से प्रातिपदिक अन्त्य अच् के स्थान पर ही ह्रस्व आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अतिमालः। अतिक्रान्तः मालाम् इस लौकिक विग्रह में ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयमा'' इससे प्रादि समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर अतिमाला इस स्थिति में विग्रह वाक्य में माला का नियतविभक्तित्व से मालाशब्द की उपजर्सन संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृत सूत्र से माला शब्द के अन्त्य के अच् के आकार के स्थान पर ह्रस्व में अकार होने पर अतिमाल शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय का विसर्ग होने पर अतिमालः रूप बना। गौ शब्द के ह्रस्व में उदाहरण चित्रगुः होता है।

पाठगत प्रश्न-2

7. ''प्रादयो गताद्यर्थेप्रथमया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
8. ''प्रादयो गहाद्यर्थेप्रथमया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?
9. ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
10. ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?
11. ''एक विभक्ति चापूर्व निपाते'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
12. ''गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

(4.4.1) ''अवादयः कुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–कुष्ट अर्थ में वर्तमान अब आदि का तृतीयान्त सुबन्त के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्याः–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र में महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र के नित्य समास के विधान से यह वार्तिक भी नित्य समास का बोध कराती है। वार्तिक मं ''अवादयः'' प्रथमात्त पद है। ''कुष्टाद्यर्थे'' यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''तृतीयया'' यह तृतीया वचनान्त पद है। ''समर्थः पदविधिः'' इसस्वे सूत्र से समर्थः पद को अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''तृतीयया'' इसके और सुपा का तदन्तविधि में समर्थपद से सह अन्वय से तृतीयान्त समर्थ से सुबन्त से आता है। कुष्ट आदि अर्थ में अब आदि का शिष्ट सम्मत् प्रयोग है। और वार्तिक का अर्थ आता है–''कुष्ट आदि अर्थ में वर्तमान अवादि तृतीयान्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अवकोकिलः। अवकुष्टः कोकिलया इस लौकिक विग्रह में अब कोकिला टा इस अलौकिक निग्रह में प्रोक्त वार्तिक से कुष्ट आदि अर्थ में विद्यमान अब इस निपात कोकिजा टा इस सुबन्त के साथ तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में सुप् का लोप होने पर अवकोकिला इस स्थिति में कोकिला का ''एक विभक्ति चा पूर्व निपाते'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''गोस्त्रियोरुप सर्जनस्य'' इससे ह्रस्व होने पर प्रक्रियाकार्य में अवकोकिलः रूप होता है। सङ्गत अर्थ से समान अर्थ इत्यादि वार्तिक का उदाहरण है।

(4.4.2) ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' (वार्तिक)

वार्तिक अर्थः–ग्लानि आदि अर्थ में वर्तमान परि आदि-चतुर्थ्यन्त समर्थ से सुबन्त को नित्य

टिप्पणियाँ

समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' इस सूत्र में महाभाज्य में पढ़ी गयी है। इस सूत्र के नित्य समास विधान से यह वार्तिक भी नित्य समास को बोध कराती है। वार्तिक में पर्यादय: यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है, ग्लानि आदि अर्थ में ग्लानादार्थे सप्तम्येकवचनान्त पद है। चतुर्थ्या यह तृतीयान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र से समर्थ: पद को अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबायजिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप पद की अनुवृत्ति होती है। ''चतुर्थ्या'' इसका और सुपा का तदन्तविधि में समर्थ पद के साथ अन्वय से चतुर्थ्यन्त समर्थ से सुबन्त द्वारा आता है। ग्लानि आदि अर्थ में पर्यादि शिष्ट सम्मत प्रयोग हैं। यही वार्तिक का अर्थ आता है। ''ग्लानि अर्थ में वर्तमान परि आदि चतुर्थ्यन्त से समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।''

उदाहरण–इस वार्तिक का पर्यध्ययन: इसका उदाहरण है। अध्ययनाय परिग्लान: इस लौकिक विग्रह में परि अध्ययन ङे इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से ग्लानि आदि अर्थ में विद्यमान परि इस अध्ययन ङे इससे चतुर्थ्यन्त सुबन्त के साथ तत्पुरुषसंज्ञा होता है। इसके बाद समास में सुप् का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में पर्यध्ययन: रूप बना। उद्युक्त: संग्रामाय उत्संग्राम: इत्यादि यहाँ उदाहरण है।

(4.4.3.) ''निरादय: क्रान्ताद्यर्थ पञ्चम्या:'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर् आदि पञ्चम्यत्त समर्थ से सुबन्त को नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र को महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र के नित्यसमास विधान से इस वार्तिक से नित्य समास का बोध होता है। वार्तिक में निरादय: पद प्रथमा बहुवचनान्त पद है। क्रान्ताद्यर्थे सप्तम्येकवचनान्त पद है। और पञ्चम्या तृतीया एकवचनान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र में समर्थ: पद को अधिकृत किया जाता है। ''प्राक्कडारात्समास:'' ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र है। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''पञ्चम्या'' का और सुपा का तदन्त विधि में समर्थ पद के साथ अन्वय से पञ्चम्यन्त समर्थ से सुबन्त से आता है। क्रान्त आदि अर्थ में निर् आदि का शिष्ट सम्मत प्रयोग होता है। और वार्तिक आता है–''क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर आदि पञ्चम्यन्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है निष्कौशाम्बि:। निष्क्रान्त: कौशाम्ब्या इस लौकिक विग्रह में निर् कौशाम्बी ङसि इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से क्रान्ताद्यर्थ में विद्यमान निर् कौशाम्बी ङस् इस समर्थ सुबन्त से तत्पुरुषसमास संज्ञक होता है। इसके बाद निर् का पूर्वनिपात होते प्रातिपदिकत्व से और सु का लोप होने से प्रक्रिया कार्य में निर् कौशाम्बी होता है। तब ''एक विभक्ति-चापूर्व निपाते'' उससे कौशाम्बी का उपसर्जन संज्ञा में ह्रस्व होने पर

निष्कौशाम्बी शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य होने पर निष्कौशाम्बिः रूप बना। निष्क्रान्तः वाशणस्थाः निर्वाणसिः इत्यादि उदाहरण है।

''उपपदमतिङ्'' इससे वक्ष्यमात्र सूत्र से उपपद समास से प्राग् उपपद किम् वर्णन करने के लिए सूत्र आरम्भ हुआ है।

(4.5) ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्''

सूत्रार्थ–सप्तम्यन्त पद में ''कर्मव्यण्'' इत्यादि में वाच्यन्त द्वारा स्थित जो कुञ्ज आदि तथा उसके वाचक पद को उपपद संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपपद संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं। तत्र उपपदं सप्तमीस्यम् पदच्छेद है। यह अव्ययपद है। उपपदं सप्तमीस्थम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। सप्तम्यां तिष्ठति इति सप्तमीस्थम्। इस सूत्र से पूर्व ''धातोः'' अधिकार प्रवृत्त होता है। और वह अधिकार तृतीयाध्याय समाप्ति तक है। और तृतीय अध्याय समाप्ति तक जो सूत्रों से जो प्रत्यय विहित हैं उनमें धातु ही परम होते हैं। प्रस्तुत सूत्र से धातु अधिकार के अन्तर्गत सूत्रों द्वारा जहाँ-जहाँ सप्तम्यन्त पद प्रयुक्त हैं वहाँ उस बोध्य को जो वाचक पद की उपपद संज्ञा होती है। अत एव सूत्र का अर्थ होता है–सप्तम्यन्त में पद में कर्मण्यण् इत्यादि में वाच्यत्व से स्थित कुञ्ज आदि उस वाचक को उपपद संज्ञा होती है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है कुञ्जकारः। (कुम्भ बनाता है) कुम्भं करोति इय अर्थ में ''कर्मण्यण्'' से अण् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में कर्मणि यह सप्तम्यन्त पद है। ''कर्मणि'' इससे बोध्य का कर्मीभूत का कुम्भवाचक जो कुम्भपद है उसकी ही उपपद संज्ञा प्रस्तुत सूत्र से होती है।

पाठगत प्रश्न-3

13. ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

14. ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

15. ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

16. ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

17. ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

18. ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

19. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

20. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस का एक उदाहरण दीजिये?

टिप्पणियाँ

(4.6) ''उपपदमतिङ्''

सूत्रार्थ–उपपद सुबन्त को समर्थ के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है और यह समास अतिङन्त है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उपपद तत्पुरुष समास होता है। पद द्वयात्मक इस सूत्र में उपपदम् अतिङ् ये दो पद प्रथमा एकवचनात हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् की अनुवृत्ति होती है। प्रथमान्त समर्थग्रहण से तृतीयान्त से विपरिणाम होता है। उससे समर्थ होता है। अविद्यमान है तिङ् जिसमें वह है अतिङ् यह बहुव्रीहि समास है। अतिङन्तम् यह तात्पर्य है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''तत्पुरुष'' ये दो सूत्र अधिकृत सूत्र हैं। ''समर्थ: पदविधि :'' इससे समर्थ पद अधिकृत किया जाता है। ''नित्यं क्रीडाजीविकयो:'' इस सूत्र से नित्य की अनुवृत्ति होती है। सुप् की उपपद के विशेषण से तदत्तविधि में सुबन्त उपपद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ आता है–उपपद सुबन्त को समर्थ से समर्थ के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। और यह समास अतिङन्त: है।

सूत्र में अतिङ् पद के ग्रहण के भाव में माभवान् भूत इस प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है। तथाहि ''माङिलुङ्'' इससे माङ्योग में भू धातु से लुङ् रूप होता है। सूत्र में मादि इससे उपपद समास लेना चाहिए। तदा मध्ये भवान् इस प्रयोग स्वीकार से समास के बीच में प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है और इस सूत्र का प्रयोजन सूत्र में विद्यमान है।

उदाहरण–इस सूत्र का एक उदाहरण है कुम्भकार:। कुम्भं करोति इति कुम्भकार:। (जो कुम्भ बनाने वाले है कुम्हार)। यहाँ कुम्भ करोति इस न विग्रह वाक्य को किन्तु कुम्भकार शब्द की ही अर्थ है। धातु प्रत्यय प्रकरण में ''कर्मण्यष्'' यहाँ कर्म में सप्तम्यन्त पद से कुम्भबोध से कुम्भम् यहाँ उपपद है। इसके बाद कुम्भ उपपद को ''गतिकारक उपपदों को कृत् आदि के साथ समास वचन प्राक् सुबन्त की उत्पत्ति होती है। इस परिभाषा परिवकृत कारशब्द से कृदन्त समर्थ के साथ प्रकृक सूत्रेण से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद कुम्भशब्द के कर्मत्व से कारशब्द से कृदन्त योग में ''कर्तृकर्मणो: कृति'' इससे ङस् प्रत्यय होता है। इसके बाद कुम्भङस् कार इस स्थिति में समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर निष्पन्न कुम्भकारशब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में कुम्भकार: रूप होता है। यहाँ प्रातिपदिक कारशब्द के साथ समास होने पर लौकिक विग्रह वाक्य असम्भव है।

(4.6.1) ''गतिकारकोपपदानां कहभि: सह समासवचनं प्राक् सुबुन्पत्ते:'' (परिभाषा)

परिभाषार्थ–गति संज्ञक के कारक संज्ञक के और उपपद संबक के कृदन्त के साथ समास कृदन्त से सुबुपत्ति पहले (प्राक्) होती है।

परिभाषा व्याख्या–''उपपरमतिङ्'' इस सूत्र में सहसुपा इस सूत्र से सुपा की अनुवृत्ति नहीं की जाती है। तब तिङ्गत्त से उपपद के साथ समास का प्रसङ्ग है, उसके निवारण के लिए सूत्र

में अत्तिङ् यह प्रदत्त है। और सूत्र में सुप् की उत्पत्ति का पहले ही कृदन्त के साथ उपपद का समास विहित है। सुप पद का सूत्र में अनुवृत्ति यदि होती है तो तिङन्त प्रतिषेध के लिए अतिङ् पद नहीं देना चाहिए। तथापि सुपा की अनुवृत्ति कैसे। किस प्रकार नहीं होती है प्रश्न होने पर सुप् उत्पत्ति का पूर्व समास में प्रमाणं दिखाता है'' (गतिकारकोपपदानां कृदभिः सह समासवचने प्राक् सुबुन्पत्तेः'') गति कारक उपपदों की कृदन्त के साथ समास वचन को पहले सुप् की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण–इस परिभाषा का उदाहरण है व्याघ्री। विशेषण से आ समन्त से जिघ्रति विग्रह में आङ् उपपद में घ्रा धातु के ''आतश्चोपसर्गे'' इससे क प्रत्यय होने पर ''आतोलोप प्रति च'' इससे धातु के आकार का लोप होने पर अ ध् अ स्थिति में सर्वसंयोग होने पर आ घ्र होता है। तब घ्र इससे कृदन्त के साथ आ उपपद की सुप् की उत्पत्ति के पूर्व ''उपपदमतिङ्'' इससे उपपद समास में आघ्र पद निष्पन्न होता है। इसके बाद ''गतिश्च'' सूत्र से गति संज्ञक वि के उपसर्ग के आंघ्र के साथ ''कुगतिप्रादयः'' इससे नित्य प्राति तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद वि आघ्र इस स्थिति में ''इको यणचि'' इससे वि के इकार की अच् होने पर आकार पर यण यकार होने पर सर्वसंयोग होने पर व्याघ्र शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सुप् की उत्पत्ति के पूर्व में ही ङीष् प्रत्यय होने पर व्याघ्री रूप बना।

कारक का उदाहरण है अश्वक्रीती। अश्वेन क्रीता इस लौकिक विग्रह में अश्व टा क्रीत इस अलौकिक विग्रह में ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र से क्रीत इस कृदन्त के साथ करणकारक के अश्व टा का समास होने पर प्रक्रियाकार्य निष्पन्न होने पर अश्वक्रीत शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' इस ङीष् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अश्वक्रीती रूप बना है।

(4.7) ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः''

सूत्रार्थ–संख्या अव्यय आदि का अङ्गुल्यन्त तत्पुरुष के समासान्त तद्धित संज्ञक को अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। त्रयात्मक इस सूत्र में तत्पुरुषस्य, अङ्गुलेः, संख्याव्ययादेः, ये तीनों पद षष्ठयेकवचनान्त हैं। ''अच्प्रत्यन्नवपूर्वात् समालोम्नः'' इससे अच् प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'', ''तद्धिताः'', ''प्रत्ययः'', ''परश्च'' ये सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र हैं। ''अङगुलेः'' यह ''तत्पुरुष का विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से तदन्त विधि में अङ्गुल्यन्तस्य तत्पुरुषस्य पद होता है। ''संख्याऽव्ययादेः'' इसका भी तत्पुरुष के अन्यत्र अन्तय होता है। (संख्या च अव्ययं च संख्या व्ययम्) (संख्या और अव्यय)। संख्या और अव्यय आदि है जिसके वह पद है संख्याव्ययादिः उसका भी द्वन्दगर्भबहुव्रीहि समास होता है। और सूत्रार्थ आता है, ''संख्याऽव्ययादि अङ्गुलि अन्त के तत्पुरुष के समासान्त को तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–संख्यापूर्व अङ्गुलि अन्त के समासान्त तत्पुरुष के अच् का उदाहरण है द्व्यङ्गुल

दार्वादिकम्। द्वे अङ्गु ली प्रमाणस्य इस लौकिक विग्रह में द्वि औ अङ्गुलि औ इस अलौकिक विग्रह में तद्धित अर्थ में मात्र अचि की विवक्षा में ''तद्वितार्थोन्तरपद समाहारे च'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद संख्यावाचक द्वि औ का उपसर्जन से पूर्वनिपात होता है। इस समास के ''तत्पुरुष:'' इससे तत्पुरुषत्व ''संख्यापूर्वोद्विगु:'' इस सूत्र से द्विगुत्वम् होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक से सुप् का लोप होने पर द्वि अङ्गुलि स्थिति में यण् होने पर द्व्यङ्गुलि: स्थिति होने पर प्रस्तुत सूत्र से संख्यापूर्वस्य तत्पुरुष के समासान्त का अच् प्रत्यय होता है। अच् के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संग होने पर ''तस्यलोप:'' इससे लोप होने पर द्व्यङ्गुलि अ होने पर ''यचिञम्'' इससे द्व्यङ्गुलि पद की ञ संज्ञा होने पर ''यस्थेति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न द्व्यङ्गुल शब्द से सु प्रत्यय होने पर द्व्यङ्गुलम् रूप निष्पन्न होता है। अव्ययपूर्व अङ्गुल्यन्त के समासान्त का उदाहरण है निर्गतम् अङ्गुलिभ्य: निरङ्गुलम्।

पाठगत प्रश्न-4

21. ''उपपदमतिङ्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
22. ''उपपदमतिङ्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?
23. ''गतिकारकोपपदानां कृञ्दि: सह समासवचनं प्राक् सुबुन्पत्ते:'' इस परिभाषा का अर्थ क्या है।
24. सुप् की उत्पत्ति का प्राक् कृदन्त के साथ गति समास में क्या उदाहरण है?
25. ''तत्पुरुषस्याङ्गुले: संख्याऽव्ययादे:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
26. ''संख्यापूर्वस्य तत्पुरुषस्य का समासान्त विधाने उदाहरण क्या है?
27. ''अव्ययपूर्वपद का तत्पुरुष का समासान्त विधान में उदाहरण क्या है?

(4.8) ''अह: सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रे:''

सूत्रार्थ–अहन्, सर्व, एकदेश, संख्याओं, पुण्य शब्दों से और संख्या अव्यय आदि से परे जो रात्रिशब्द के अन्त के तत्पुरुष समासान्त तद्धितसंज्ञक का अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में ''अह: सर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात'' यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। और यह अव्ययपद है। ''रात्रे:'' यह षष्ठयेकवचनान्त पद है। ''तत्पुरुषस्याङ्गुले: संख्याऽव्ययादे:'' इस सूत्र से तत्पुरुषपद की अनुवृत्ति होती है। ''अच्प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोभ्न:'' इससे अच् पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ता:'', ''तद्धिता:'', ''प्रव्यय:'', ''परश्च'' ये अधिकृत सूत्र हैं। चकार पूर्व सूत्र से ''संख्याव्ययादे:'' से यह पद ग्रहण किया जाता है। अदृश्च, सर्वश्च, एकदेशश्च, संख्यातश्च, पुण्यश्च, अह:सर्वैकदेशसंख्यातपुण्यम् इससे समाहार द्वन्द होता है। एकदेश शब्द से अवयववाचक

पूर्व, पर, अधर, उत्तर आदि शब्दों का ग्रहण होता है। और सूत्र का अर्थ आता है–''अहन्, सर्व, एकदेश, संरथात, पुण्य शब्दों से और संख्या अन्ययादि परे जो राजिशब्द का तत्पुरुष समासान्त का तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

इस सूत्र का व्याख्यान अवसर पर ''अहर्ग्रहणंद्वन्द्वार्थम्'' यह वार्तिक पढ़ा गया है। अहन् पूर्व रात्रि अन्त द्वन्द के समासान्त अच् प्रत्यय उससे होता है।

उदाहरण–अहन् पूर्व रात्रि अन्त समासान्त अच् प्रत्यय का उदाहरण है–अहोरात्रः। अहश्च, रात्रिश्च, अनयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह में अहन् सु रात्रि सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''अल्पाध्तरम्'' इस सूत्र से अल्प अच् से सहित अहन् सु इसका पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व से सु का लोप होने पर अहन् रात्रि स्थिति होने पर ''अहग्रर्हणं द्वन्दार्थम्'' इस वार्तिक परिष्कृत प्रकृत सूत्र से अहन् पूर्वपद का रात्रि अन्त द्वन्द के समासान्त अच् प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होने पर अहो रात्रि अ यह होने पर ''यचियम्'' इस सूत्र से अहोरात्रि की असंज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इस सूत्र से इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर अहोरात्र शब्द से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अहोरात्रः शब्द निष्पन्न होता है।

सर्व पूर्वपद का रात्रि अन्त तत्पुरुष का समासान्त का उदाहरण है सर्वरात्रः। सर्वाचासौ रात्रिश्च इस लौकिक विग्रह में सर्वा सु रात्रि सु इस अलौकिक विग्रह में तत्पुरुष समास होने पर सु प्रत्यय का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में **सर्वरात्रि** इस स्थिति में सूत्र से सर्वपूर्व पद का सर्वरात्रः शब्द निष्पन्न होता है।

एक देश पूर्वपद का समासान्त उदाहरण–पूर्वं रात्रेः पूर्वरात्रः। संख्यात पूर्वपद के समासान्त का उदाहरण है संख्यातरात्रः। पुण्यपूर्वपद का समासान्त का उदाहरण है पुण्यरात्रः।

(4.7) ''रात्राछाऽहाः पुंसि'' (2.4.27)

सूत्रार्थ–रात्रि, अहन्, अन्त वाले द्वन्दतत्पुरुषों में पुल्लिंग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पुल्लिंग होता है। अहो रात्र शब्द के ''परवल्लिङ्गंद्वन्दतत्पुरुषयोः'' रात्रि शब्द के स्त्रीलिङ्ग से स्त्रीलिङ्गता प्राप्त होती है, उसको बाधकर ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से नपुंसकत्व की आपत्ति है। और सर्वरात्रशब्द की स्त्रीलिङ्गतापत्ति है। अहोरात्र और सर्वरात्र शब्दों के क्या लिङ्ग होना चाहिए, इसके वर्णन के लिए यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है।

द्विपदात्मक इस सूत्र में **रात्राछाहाः** यह प्रथमा बहुवचनान्त पा है और **पुंसि** यह सप्तम्येकवचनान्त यह है। ''परवाल्लिङ्ग द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र से ''द्वन्दतत्पुरुषयोः'' पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका विभक्तिविपरिणाम से **द्वन्दतत्पुरुषौ** रूप होता है। रात्रश्च, अह्नश्च, अदृश्य **रात्राह्नाहाः** यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। द्वन्दतत्पुरुषौ इसका विशेषण से **रात्राह्नाहाः** का तदन्तविधि में रात्र, अहन् अन्त में **द्वन्दतत्पुरुष** अर्थ है और ''रात्र, अहन् में अन्त वाले शब्दों को द्वन्दतत्पुरुष में पुल्लिंग होता है।

टिप्पणियाँ

इस सूत्र व्याख्यान में ''संख्यापूर्वा रात्रिः'' लिङ्गानुशासन के नपुंसक अधिकार में यह सूत्र अवलम्ब होकर एक वचन प्राप्त होता है ''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम्''। इस का अर्थ है संख्या पूर्वपद का और रात्रि अन्त वाले समास का नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होता है।

उदाहरण–अदृश्य रात्रिश्च इस समास में निष्पन्न अहोरात्र शब्द का ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व को बांधकर प्रकृतसूत्र से पुल्लिग विधान से सु प्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में अहोरात्रः रूप होता है। इसी प्रकार सर्वरात्र शब्द के सु प्रत्यय होने पर सर्वरात्रः रूप होता है।

''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्'' इस वचन के अनुसार द्वयोः रात्र्योः समाहारः (दो रातों का समाहार) इस विग्रह में निष्पन्न द्विरात्रशब्द का नपुंसक में प्रयोग होता है।

उसी प्रकार त्रिरात्रम्, नवरात्रम् इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

(4.10) ''राजाहः सखिभ्यष्टच्''

सूत्रार्थ–राजा, अहन्, सखि शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक सूत्र में राजाहः सखिभ्यः टच् यह पदच्छेद है। राजाहः सखिभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त यह है। और टच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। राजा च अदृश्च सखा च राजाहः सखायः, तेभ्य इतरेतरद्वन्द। राजा और अहन् (दिन) और सखा इसमें इतरेतरद्वन्द समास है। ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः'' इस सूत्र से तत्पुरुष पद की अनुवृत्ति होती है। उसके विभक्ति विपरिणाम से पञ्चमी एकवचन में तत्पुरुषात् पद होता है। उसके विशेषण से ''राजाहः सखिभ्यः'' की तदन्तविधि में राजाहःसखिशब्दान्तात् तत्पुरुषाद् होता है। ''समासान्ताः'', ''तद्धिताः'', ये हो सूत्र अधिकृत हैं। और सूत्र का अर्थ होता है ''राजा, अहन्, सखि, शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है परमराजः। परमश्चासौ राजा च इस लौकिक विग्रह में परम सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे तत्पुरुष समास होने पर प्रक्रिया कार्य में परमराजन् शब्द निष्पन्न होता है। इससे प्रकृत सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होने पर परमराजन् टच् स्थिति में टकार का ''चुटू'' इस सूत्र से चकार का और ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर परमराजन् अ होता है। इसके बाद परमराजन् की असंज्ञा होने पर ''नस्तहिते'' सूत्र से टि का अन् का लोप होने पर परमराज् अ स्थिति में सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न परमराज शब्द के परवल्लिङ्गत्व से पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में परमराजः रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-5

28. ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याश्च रात्रेः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

29. ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याश्च रात्रेः'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

30. ''रात्राह्नाहाः पुंसि'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।

31. ''रात्राह्नाहाः पुंसि'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

32. ''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम्'' इस वचन का क्या अर्थ है? और उदाहरण क्या है?

33. ''राजाहसखिञ्यष्टच्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

34. ''राजाहसखिञ्यष्टच्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

(4.11) ''आन्यहतः समानाधिकरण जातीययोः''

सूत्रार्थ–समान अधिकरण में उत्तरपद में और जातीय परे महत् के अकारे को आकर आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से महत् के ञकार को आकारादेश होता है। त्रि पदात्मक इस सूत्र में आत् महतः समानाधिकरण जातीययोः पदच्छेद है। इस सूत्र में आत् प्रथमा एकवचनान्त पद है। महतः पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''समानाधिकरणजातीययोः'' यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। समानाधिकरणं च जातीयश्च समानाधिकरणजातीयौ तयोः समानाधि करणजातीययोः यहाँ इतरेतर द्वन्द है। ''अनुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में पद की अनुवृत्ति होती है। ''उत्तरपदे'' का अन्वय का समानाधिकरण इस अंश से ही सम्भव होता है ''प्रकारवचनेञ्जातीयर्'' इससे विहित जातीय के प्रत्ययत्व से उत्तर पदत्व के अभाव से। और सूत्रार्थ है–''समानाधिकरण में उत्तर पद में और जातीय परे महत् के आकार आदेश होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से महत् के अन्त्य तकार के स्थान पर ही आकार आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है महाराजः। महान् च असौ राजा च इति लौकिक विग्रह में महत् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य होने पर महत् राजन् सिद्ध होता है। इसके बाद ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रकृतसूत्र से उत्तरपद पर महत् के तकार का आकारादेश होने पर यह आ राजन् होने पर सवर्णदीर्घ होने पर महाराजन् निष्पन्न होता है। इसके बाद समासान्त में टच् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य सम्पन्न होने पर महाराजः रूप सिद्ध होता है।

जाति इय पर में उदाहरण है महाजातीयः। महत्त्व विशिष्ट इस अर्थ में महत् से ''प्रकारवचने जातीयर्'' इससे जातीयर् प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप में महत् जातीय होने पर प्रकृत सूत्र से जातीयरि पर होने पर तकार का आकर में सवर्ण दीर्घ होने पर प्रक्रिया कार्य में महाजातीयः रूप होता है।

(4.12) ''द्रव्यष्टनः संख्यायाम बहुव्रीह्यशीत्योः''

सूत्रार्थ–द्वि अण्टन् इन दो शब्दों के संख्यावाचक उत्तर पद में आकार को अन्तादेश होता है,

टिप्पणियाँ

किन्तु बहुव्रीही समास में और अशीति उत्तरयद पर में होने पर नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आकर को अन्तादेश होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में द्व्यष्टज: संज्ञायाम् अवहुव्रीह्यशीत्यो:'' यह पदच्छेद है। इस सूत्र में दृष्यष्टन: यह षष्ठी एकवचन अत्त वाला पद है। संख्यायाम् यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। और अबहुब्रीह्यशीत्यो: यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। द्वि च अष्ट च द्व्यष्ट, तस्य द्रव्यष्टन: यहाँ समाहार द्वन्द है। बहुव्रीहि अशीतिश्च बहुवीह्यशीती, तयो: बहुव्रीह्यशीत्यो: यह इतरेतरद्वन्द। न बहुव्रीह्यशीत्यो अबहुव्रीह्यशीत्यो: यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। ''आन्महत: समानाधिकरण जातीययो:'' इस सूत्र से आत् की अनुवृत्ति होती है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में पदर की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद में इसका अन्वय संख्याम् इससे और अशीत्याम् से सम्भव होती है। बहुव्रीहौ इस पद के साथ उसकी अन्वय नहीं होती है। और सूत्र का अर्थ आता है–''द्वि अष्टन् इन दोनों शब्दों के संख्यावाचक उत्तरपद पर में होने पर आकार को अन्तादेश होता है। किन्तु बहुव्रीही समास में और अशीति उत्तरपद में पर रहने पर नहीं होता है। ''अलोडन्त्यस्य'' इस परिभाषा से अन्त्य के स्थान पर ही आकार आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र के द्विशब्द का उदाहरण है तावत् द्वादश। द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह में द्वि औ दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से द्वन्द समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर द्वि दशन् स्थित प्रकृतसूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद में पर में होने पर द्वि शब्द को आकार को अत्तादेश होने पर द्वादशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य होने पर द्वादश रूप होता है। उसी प्रकार द्वि शब्द का द्वाविंशति: और **द्वात्रिंशत्** इत्यादि उदाहरण है। उसी प्रकार अष्टन् शब्द का अष्टादश उदाहरण होता है।

(4.13) ''त्रेस्त्रय:''

सूत्रार्थ–त्रिशब्द का संख्यावाचक उत्तरपद परे जयस् आदेश होता है किन्तु बहुव्रीहिसमास में और अशीति उत्तर पद परे नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से त्रिशब्द का जयस् आदेश होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में त्रि शब्द का यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। ''द्व्यष्टन: संज्ञायामबहुव्रीह्यशीत्यो:'' इस सूत्र से संख्यायाम् पद को और अबहुव्रीह्यशीत्यो: पर की अनुवृत्ति होती है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद में अन्वय संख्यायाम् से और अशीत्याम् से सम्भव होता है। बहुव्रीहौ'' के साथ उसका अन्वय नहीं होता है।

सूत्रार्थ आता है कि ''त्रिशब्द का संख्यावाचक उत्तरपद पर में होने पर त्रयस् आदेश होता है किन्तु बहुव्रीहि समास में और अशीति उत्तरपद पर में होने पर नहीं होता है। ''अनेकाल्शित्सर्वस्य'' इस परिभाषा से त्रिशब्द के सम्पूर्ण स्थान पर ही त्रयस् आदेश होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र के द्विशब्द का उदाहरण है तावत् त्रयोदय। त्रय: च दश च इस लौकिक विग्रह में त्रि जस् दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से द्वन्द समास में प्रक्रिया कार्य में सुप् का लोप होने पर त्रिदशन् स्थित प्रकृत सूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद

होने पर त्रिशब्द के सर्वके स्थान पर त्रयस् आदेश होने पर त्रयस् दशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद सकार का रुत्व होने पर ''हशि च'' इससे रकार का उकार में गुण होने पर सर्व संयोग से त्रियोदशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रक्रियाकार्य में त्रयोदश रूप बना। इसी प्रकार त्रिशब्द का त्रियोविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत् उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-6

35. ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः इस सूत्र क्या अर्थ है?

36. महाराजः यहाँ महत के आकार को अन्तादेश किस सूत्र से होता है?

37. जातीपरि पर होने पर महत के आकार को अन्तादेश का उदाहरण क्या है?

38. ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

39. द्वादश यहाँ पर द्विशब्द के आकार को अन्तादेश कैसे (क्यों) हुआ?

40. ''त्रेस्त्रयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

41. जयस् यह आदेश सम्पूर्ण त्रिशब्द के स्थान पर कैसे होता है?

(4.14) ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः''

सूत्रार्थ–द्वन्द और तत्पुरुष के परपद का ही लिङ्ग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द में और तत्पुरुष में परवत् (पहले वाले के समान) लिङ्ग होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में परवत् यह अव्यय पद है। लिङ्गम् यह प्रथमा एकवचनात पद है। द्वन्दतत्पुरुषोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है। पर शब्द षष्ठयन्त से ''तत्र तस्यैव'' इससे वति प्रत्यय होने पर परवत् रूप बना है। पर का तात्पर्य पहले वाले पद के समान ही है। द्वन्दः च तत्पुरुषः च द्वन्दतत्पुरुषौ तयोः द्वन्दतत्पुरुषयोः यहाँ इतरेतरद्वन्दसमास है। और सूत्रार्थ आता है–''द्वन्द और तत्पुरुष में परपद (पूर्वपद) का ही लिङ्ग होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का द्वन्द समास में उदाहरण है–तावत् कुक्कुटमयूर्यौ। कुक्कुटः च मयूरी च इस लौकिक विग्रह में कुक्कुट सु मयूरी सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रक्रिया कार्य में कुक्कुटमयूरी शब्द निष्पन्न होता है। कुक्कुटमयूरी यहाँ मयूरी का स्त्रीलिङ्गत्व से प्रकृतसूत्र से निष्पन्न द्वन्द्व समास के कुक्कुटमयूरी शब्द का स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा द्विवचन में कुकुटमयूर्यौ रूप निष्पन्न होता है।

और तत्पुरुष में उदाहरण है अर्धपिप्पली। अर्धं पिप्पल्याः इस लौकिक विग्रह में अर्ध सु पिप्पली ङस् इस अलौकिक विग्रह में 'अर्धं नपुंसकम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य में अर्धपिप्पली शब्द निष्पन्न होता है।

अर्धपिप्पली यहाँ पर पिप्पली का स्त्रीलिङ्गत्व प्रकृत सूत्र से अर्धपिप्पली का सम्पूर्ण स्त्रीलिङगत्व के विधान से तथा इसके बाद प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने पर अर्धपिप्पली रूप बना।

(4.14.1) ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्य:'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ–द्विगु समास में प्राप्त, आपन्न, अलम् पद में तत्पुरुष समास होने पर और गतिसमास होने पर परवत् लिङ्गता (पहलेपद के अनुरूप लिङ्ग का प्रतिषेध होता है।)

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक को ''परवल्लिङंग द्वन्दतत्पुरुषयो:'' इस सूत्र के वर्णन अवसर पर महाभाष्य में पढ़ा गया है। अत: यह सम्प्रात सूत्र का परवत् लिङ्गत्व का ही निषेधात्मक वार्तिक है। तीन (त्रि) स्थानों पर परवत् लिङ्गता का निषेध है। यह वार्तिक।

(क) द्विगु समास में परवल्लिङक्ता का निषेध होता है।

(ख) प्राप्तपन्न (प्राप्त और आपत्र) पूर्वपद की तत्पुरुष के परवत् लिङ्गता निषेध होती है।

(ग) गति समास में परवत लिङ्गता निषेध होती है।

अलम् पूर्व पद का तत्पुरुष समास का विधायक सूत्र का कोई भी सूत्र प्राप्त नहीं होता है। तथापि इस वार्तिक में उसके उल्लेख से ही अलम् पूर्वक तत्पुरुष होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का द्विगु समास में उदाहरण है पञ्चकपाल: पञ्चसु कपालेषु संस्कृत: इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् सुप् कपाल सुप् इस अलौकिक विग्रह में ''संस्कृतंभक्षा:'' इससे तद्धित विवक्षा में ''तद्धितार्थोन्तरपद समाहारे च'' इस सूत्र से द्विगु समास में संख्यावाचक का पूर्वनिपात होने पर, सुप् का लोप होने पर पञ्चन् के नकार का लोप होने पर पञ्चकपाल सिद्ध होता है।

उससे सप्तमी बहुवचन में सुप् का लोप होने पर पञ्चकपाल सुप् इस सप्तम्यन्त से ''संस्कृतं भक्षा:'' इससे तद्धित में अण् प्रत्यय होने पर ''द्विगोर्लुगनपत्ये'' इस सूत्र से अण् प्रत्यय का लोप होने ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् का लोप होने पर पञ्चकपाल तद्धितान्त शब्द निष्पन्न होता है। उसके प्रातिपदिकत्व होने पर इसके बाद विभक्ति उपत्ति से पहले लिङ्गनिर्णय करना चाहिए। जब ''परवल्लिङ्कग द्वन्दतत्पुरुषयो:'' इस सूत्र से कपाल शब्द का ही नपुंसकत्व प्राप्त होने पर प्रस्तुत वार्तिक से द्विगुसमास में परवत् लिङ्गता का निषेध होने पर पुरोडाश: इस विशेष्य के अनुसार पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पञ्चकपाल: रूप सिद्ध होता है।

प्राप्त, आपन्न, पूर्वकों के उदाहरण हैं–प्राप्तजीविक:, जन:, आपन्नजीविक: जन:, अलङ्कुमारि: आदि और गतिसमास में उदाहरण है निष्कौशाम्बि:।

(4.15) ''प्राप्तापन्नैः च द्वितीयया''

सूत्रार्थ–प्राप्त, आपन्न इन दोनों शब्दों का द्वितीया के साथ समास होता है और इन दोनों के अकार को अन्तादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास और अकार को अन्तादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुषसमास और अकार को अन्तादेश होता है। प्रसङ्गतः प्राप्तापन्नशब्द के योग में यह समासविधायक सूत्र प्रवृत्त है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में **प्राप्तान्ने** प्रथमाद्विवचनान्त पद है। **'च'** अव्यय पद है। **द्वितीयया** यह तृतीया एकवचनान्त पद है। द्वितीयया अ प्रश्लेष है। प्राप्तं च आपन्नं च प्राप्तापन्ने यह इतरेतरद्वन्द है। समासः सुप्, सहसुपा, तत्पुरुषः यह सब अधिकृत सूत्र हैं। सूत्र में चकार का ग्रहण दो विधियों का समुच्चयार्थक है। द्वितीयया यहाँ तदन्तविधि में द्वितीयान्त सुबन्त के द्वारा यह अर्थ आता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से प्राप्तापन्नशब्दों के अन्त्य के स्थान पर ही अकार आदेश होता है। यह सूत्र ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' यह द्वितीयातत्पुरुष समास का अपवाद भूत है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–प्राप्तजीविकः। प्राप्तः जीविकाम् इस लौकिक विग्रह में प्राप्त सु जीविका सु अम् इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त सूत्र से प्राप्त सु सुबन्त को जीविका अम् इससे द्वितीयान्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में प्राप्तजीविका स्थिति में इस सूत्र के प्रश्लेषबल से प्रापत आकार के स्थान पर अकार होने पर प्राप्तजीविका होने पर जीविका के उत्सर्जन संज्ञा होने पर ह्रस्तत्व निष्पन्न होने पर प्राप्तजीविका शब्द से पूर्वोक्त वार्तिक से विशेष्य अनुसार पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में प्राप्तजीविकः रूप सिद्ध होता है। उसी प्रकार से ही प्राप्तजीविकः, आपन्न जीविकः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(4.16) ''अर्द्यर्चाःपुंसि च''

सूत्रार्थ–अर्ध अर्च आदि गण में पठित शब्दों के पुंसत्व और नपुंसक लिङ्ग होते है।

सूत्र व्याख्या–अर्धर्चादि तत्पुरुषसमास निष्पन्न शब्दों का विशेषतया पुल्लिंग और नपुंसक में प्रयोगविधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अर्धर्चाः यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है। पुंसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। ''अपथं नपुंसकम्'' इस सूत्र से चकार से नपुंसक स्वीकृत किया जाता है। और उसके विभक्ति विपरिणाम से सप्तमी में नपुंसक होता है। अर्धर्चाः यहाँ बहुवचन से अर्धर्चादिगण में पठित अर्धर्चादि शब्द ग्रहण किये जाते हैं और सूत्र का अर्थ आता है–''अर्धर्चादि गण में पठित शब्द को पुल्लिंग और नुपंसकलिंग होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अर्धर्चम्, अर्धर्चः। ऋचः अर्धम् इस लौकिक विग्रह में ऋच् ङस् अर्ध सु इस अलौकिक विग्रह में ''अर्धं नपुंसकम्'' इससे विकल्प से तत्पुरुष समास में सुप् का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में अर्धर्च् निष्पन्न किया जाता है। इसके बाद ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र से अर्धर्च् के समासान्त में अप्रत्यय होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न अर्धर्च शब्द के तत्पुरुष संज्ञकत्व से ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस परपद के ऋच् के अनुसार स्त्रीलिङ्गत्व प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रोक्त सूत्र से अर्धर्चादिगण में पठित शब्द का पुल्लिंग होने और नपुंसक प्रयोग होता है। उससे अर्धर्चः, अर्धर्चम् दो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-7

42. ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
43. द्वन्द में परवल्लिङ्ग का क्या उदाहरण है?
44. तत्पुरुष में परवल्लिङ्ग का उदाहरण क्या है?
45. ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
46. द्विगु में परवत् लिङ्गता निषेध का उदाहरण क्या है?
47. प्राप्तापन्नालम्पूर्वक तत्पुरुषों के परवत् लिङ्गता के निषेध के उदाहरण कौन-कौन से हैं?
48. गतिसमास में परवत् लिङ्गता का उदाहरण क्या है?
49. ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' सूत्र का उदाहरण क्या है?
50. ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
51. ''अधर्चाः पुंसि च'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
52. ''अधर्चाः पुंसि च'' इस सूत्र का उदाहरण कौन सा है?

''पाठ का सार''

इस पाठ में कु.गति.प्र आदि समास विधायक सूत्र ''कुगतिप्रादयः'' की व्याख्या की गई है। ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' यहाँ पर गतिसंज्ञाविधायक सूत्र की व्याख्या की गई। प्रातिसमास विधायक ''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'', ''अत्यादयःक्रान्ताद्यर्थे द्वितीया'', ''अवादय क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'', ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इन पाँचों वार्तिकों की यहाँ व्याख्या की गई है। यहाँ प्रसङ्ग से ''एक विभक्ति चापूर्व निपाते'' इस उपसर्जनसंज्ञा विधायक'' गोस्त्रियोंरूपसर्जनस्य'' इस उपसर्जन ह्रस्व विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है।

''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस उपपद संज्ञा विधायक सूत्र ''उपपदमतिङ्'' इस उपपद समास विधायक सूत्र की वर्णन से पूर्व प्रस्तुत किया गया है। ''गतिकारकोपपदानांकृद्भिः सह

समासवचनं प्राक् सुवुत्पन्तेः'' इसकी उत्पत्ति के पूर्व समास प्रतिपदिका परिभाषा की व्याख्या की गई है।

इसके बाद इस पाठ में ''तत्पुरुषस्थाङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः'' इस ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः'' समासान्त अच् प्रत्यय का ''राजाहः सखिञ्यष्टच्'' इस समासान्त का टच् प्रत्यय विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद रात्र, अहन्, अहन्त शब्द के लिङ्ग निर्णायक ''राजाह्नाऽहाः पुंसि'' सूत्र की व्याख्या की गई है। महाराजः इत्यादि में महत आकार को अन्तादेश विधायक ''आत्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र प्रतिपादित हुआ है। इसके बाद समासकार्य विधायक सूत्रों ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः', ''त्रेस्त्रयः'' ये दो सूत्र प्रस्तुत किये गये हैं। इसके बाद द्वन्छ और तत्पुरुष के परवत् लिङ्गता विधायक सूत्र ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र और निषेधक ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषधो वाच्यः'' वार्तिक प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद प्राप्तापन्नशब्दयोग में तत्पुरुषसमास विधायक सूत्र ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' सूत्र है। अर्धर्चा दि पुल्लिंग और नपुंसक लिङ्ग विधायक ''अर्धर्चाः पुंसि च'' सूत्र की व्याख्या की गई। और तत्पुरुषसमास इस पाठ में प्रतिपादित किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र की व्याख्या की गई है।
2. प्रातिसमास विधायक वार्त्तिकों को आश्रित करके एक टिप्पणी लिखो?
3. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
4. ''उपपदमतिङ्'' सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषोः'' सूत्र की व्याख्या करो?
7. सूत्रों सहित सभी पदों को सिद्ध करो–अतिमालः, निष्कौशाम्बिः, कुम्भकार, महाराजः, अहोरात्रः, प्राप्तजीविकः,

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. समान अर्थ वाले कु, गति, प्र, र, आदि का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता हैं। और वह तत्र पुरुष होता है।

टिप्पणियाँ

2. कुपुरुशः

3. ऊरी कृत्य

4. सुपुरुषः

5. ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त और डाच् अन्त वाले प्रत्यय के क्रियायोग में गति संज्ञा होती है।

6. पटपटाकृत्य

उत्तर-2

7. गति आदि अर्थ में वर्तमान प्रआदि प्रथमान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

8. प्राचार्यः।

9. उपसर्जनसंज्ञक गोशण्ड और स्त्रीप्रत्ययान्त तदन्त का प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है।

10. अतिमालः।

11. विग्रह में नियत विभक्ति की उपसर्जन संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

12. उपसर्जन गोशब्द और स्त्रीप्रत्ययान्त तदन्त प्रातिपदिक का ह्रस्व (लघु) होता है।

उत्तर-3

13. क्रुष्ट आदि अर्थ में वर्तमान अब आदि तृतीयान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

14. अवकोकिलः।

15. ग्लानि अर्थ में वर्तमान परि आदि चतुर्थ्यन्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है। और तत्पुरुष संज्ञक होता है।

16. पर्यध्ययनः।

17. क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर् आदि पञ्चम्यन्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

18. निष्कौशाम्बिः।

19. सप्तम्यन्त पद में ''कर्मण्यण्'' इत्यादि में वाच्यत्व स्थित कुम्भादि वाचक पद को उपपदसंज्ञा होती है।

20. कुम्भकारः।

उत्तर-4

21. उपपद सुबन्त को समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। और यह समास अतिङ्ग अन्त वाला है।

22. कुम्भकारः।

23. गतिसंज्ञक, कारकसंज्ञक और उपपद संज्ञक का कृदन्त के साथ समास कृदन्त से सुबन्त की उत्पत्ति के पहले होता है।

24. आध्रः।

25. संख्या और अव्यय आदि का अङ्गुल्यन्त के तत्पुरुष समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

26. दव्यङ्गुलम्।

27. निरङ्गुलम्।

उत्तर-5

28. अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्य शब्दों से और संख्या अव्यय आदि परे जो रात्रि शब्द तदन्त तत्पुरुष का समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

29. अहोरात्रः

30. रात्रि अहनन्त अहन् शब्द को द्वन्द तत्पुरुष में पुल्लिंग होता है।

31. अहोरात्रः

32. संख्यावाची पूर्वपद का और रात्रि अन्त पूर्वपद का समास के नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होता है यही वचन का अर्थ है। त्रिरात्रम्, नवरात्रम् ये उदाहरण हैं।

33. राजाहः सखि शब्दान्त (राजा, अहन्, सखि) शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त को तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

34. परमराजः यह उदाहरण है।

उत्तर-6

35. समानाधिकरण उत्तरपद और जातीय में परे महत् का आकार आदेश होता है।

36. राजन् समानाधिकरण में उत्तरपद और जातीय परे महत् को आकार आदेश होता है ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र से।

37. महाजातीयः।

38. द्वि और अष्टन् शब्दों के संख्यावाचक उत्तरपद परे आकार को अन्तादेश होता है किन्तु बहुव्रीहि समास में अशीति (अस्सी) उत्तरपद परे रहने पर।

टिप्पणियाँ

37. ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीहाशीत्योः'' सूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद परे द्विशब्द का आकार को अन्तादेश होने पर द्वादशन् निष्पन्न होता है इसके बाद अस् प्रत्यय होने पर द्वादश रूप बना है।

40. त्रिशब्द को संख्यावाचक उत्तरपद परे त्रयस् आदेश होता है, किन्तु बहुव्रीहिसमास में और अशीति उत्तरपद परे नहीं होता है।

41. ''अनेकाल्शित्सर्वस्य'' इस परिभाषा से त्रिशब्द के सम्पूर्ण स्थान पर ही त्रयस् आदेश होता है।

उत्तर-7

42. द्वन्द और तत्पुरुष समास में परपद (बाद वाला पद) का ही लिङ्ग होता है।

43. कुक्कुटमयूर्यौ।

44. अर्धपिप्पली।

45. द्विगु समास में प्राप्त, आपन्न, अलम् पूर्वपद होने पर तत्पुरुषसमास में और गतिसमास में परवत् लिङ्गता का प्रतिषेध होता है।

46. पञ्चकपालः।

47. प्राप्त, आपन्न, अलम् पूर्वक उदाहरण है यथाक्रम से प्राप्तजीविकः जनः, आपन्नजीविकः जनः, अलङ्कुमारिः।

48. निष्कौशाम्बिः।

49. प्राप्त आपन्न इन दोनों शब्दों को द्वितीया के साथ समास होता है। इन दोनों के अकार को अन्तादेश होता है।

50. प्राप्तजीविकः।

51. अर्धर्चादिगण में पठित शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होते है।

52. अर्धर्चम् अर्धर्चः ये दो उदाहरण है।

चतुर्थ पाठ समाप्त